*** प्रमुख मुहावरे और उनका अर्थ एवं वाक्य-प्रयोग** **[18]**

1. भीगी बिल्ली की तरह -

उत्तर : अर्थ – डरा हुआ, सहमा हुआ, बिना आवाज के।
पाठ में प्रयोग – “उनके पीछे-पीछे भीगी बिल्ली की तरह रतन आ रहा है – खाली हाथ।”
वाक्य प्रयोग – परीक्षा हॉल में घुसते ही वह भीगी बिल्ली की तरह चुपचाप बैठ गया।

2. मुँह फुलाना -

उत्तर : अर्थ – नाराज होना, रूठ जाना।
पाठ में प्रयोग – “लेकिन वह तुम्हारी लाडली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।”
वाक्य प्रयोग – छोटी बात पर मुँह फुलाना समझदारी नहीं है।

3. किस मर्ज की दवा होना -

उत्तर : अर्थ – किसी काम का न होना, बेकार होना।
पाठ में प्रयोग – “और तुम उसकी माँ, किस मर्ज की दवा हो?”
वाक्य प्रयोग – जो दोस्त मुश्किल में साथ न दे, वह किस मर्ज की दवा है।

4. सिर चढ़ाना -

उत्तर : अर्थ – बहुत लाड़-प्यार देकर शेखी करने देना, स्वच्छंद कर देना।
पाठ में प्रयोग – “तुम्हीं ने उसे पढ़ा-लिखाकर इतना सिर चढ़ा रखा है।”
वाक्य प्रयोग – बच्चों को जरूरत से ज्यादा सिर चढ़ाने से वे जिद्दी हो जाते हैं।

5. सब-कुछ उगलना -

उत्तर : अर्थ – सारी बातें बता देना, राज खोल देना।
पाठ में प्रयोग – “मगर तुम तो अभी से सब-कुछ उगले देती हो।”
वाक्य प्रयोग – पूछताछ में उसने सारी बातें उगल दीं।

6. काँटों में घसीटना -

उत्तर : अर्थ – किसी को मुश्किल में डालना, परेशानी में फँसाना।
पाठ में प्रयोग – “यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे।”
वाक्य प्रयोग – उसकी बातों ने मुझे बेकार में काँटों में घसीट दिया।

7. इज्जत उतारना -

उत्तर : अर्थ – अपमान करना, बेइज्जती करना।
पाठ में प्रयोग – “बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?”
वाक्य प्रयोग – सबके सामने इज्जत उतारना किसी को भी पसंद नहीं।

8. मुँह छिपाकर भागना -

उत्तर : अर्थ – शर्म से भाग जाना, पकड़े जाने पर छिप जाना।
पाठ में प्रयोग – “इनसे पूछिए कि ये किस तरह अपना मुँह छिपाकर भागे थे।”
वाक्य प्रयोग – गलती करने के बाद मुँह छिपाकर भागने की बजाय माफी माँगना बेहतर है।

9. खीस निपोरना -

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

उत्तर : अर्थ – दाँत दिखाकर बेढंगी हँसी हँसना, चापलूसी से हँसना।
पाठ में प्रयोग – "(शंकर और रामस्वरूप खीस निपोरते हैं।)"
वाक्य प्रयोग – बिना मतलब खीस निपोरते रहना उसकी आदत बन गई थी।

*** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के लिए दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए।** [6]

10. एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' का शीर्षक किसका प्रतीक है?

(A) शरीर के एक आवश्यक अंग का
(B) व्यक्ति की ऊँचाई के आधार का
(C) आत्म-सम्मान और नैतिक दृढ़ता का
(D) शारीरिक शक्ति और परिश्रम का

उत्तर : (ग) आत्म-सम्मान और नैतिक दृढ़ता का
स्पष्टीकरण:
एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' में "रीढ़ की हड्डी" केवल शरीर का अंग नहीं है, बल्कि यह हिम्मत, आत्म-सम्मान और अपने अधिकारों के लिए खड़े होने की शक्ति का प्रतीक है। उमा समाज की गलत परंपराओं के सामने झुकती नहीं है और साहस के साथ अपनी बात रखती है।
जब लड़के वाले उसे वस्तु की तरह परखते हैं, तब वह चुप रहने के बजाय विरोध करती है। अंत में वह शंकर से "बैकबोन" (रीढ़ की हड्डी) होने का सवाल उठाती है, जिससे स्पष्ट होता है कि यहाँ "रीढ़ की हड्डी" का अर्थ नैतिक साहस और व्यक्तित्व की दृढ़ता है, न कि केवल शारीरिक अंग।

11. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में किस पर व्यंग्य किया गया है?

(A) पात्रों की निर्धनता और लाचारी पर
(B) पात्रों की भाषा और हास्य पर
(C) विवाह और अशिक्षा पर
(D) समाज की अनुचित मान्यताओं पर

उत्तर : (घ) समाज की अनुचित मान्यताओं पर
स्पष्टीकरण:
इस एकांकी में लेखक ने समाज की उन गलत परंपराओं और सोच पर व्यंग्य किया है, जहाँ लड़की को एक वस्तु की तरह देखा और परखा जाता है। लड़के वाले लड़की की शिक्षा, सुंदरता और व्यवहार को अपने अनुसार तय करना चाहते हैं, जबकि लड़के की कमियों को नजरअंदाज करते हैं।
उमा इस मानसिकता का विरोध करती है और यह दिखाती है कि लड़कियों का भी आत्म-सम्मान और अधिकार होते हैं। इस प्रकार यह नाटक दकियानूसी सोच, लड़का-लड़की में भेदभाव और विवाह से जुड़ी अनुचित सामाजिक मान्यताओं पर व्यंग्य करता है।

12. "घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं" यह वाक्य शंकर की किस छवि को उजागर करता है?

(A) नैतिक साहस की कमी और चारित्रिक दुर्बलता
(B) अनुभव और विवेक की कमी
(C) चारित्रिक दृढ़ता और शारीरिक दुर्बलता
(D) उदासीनता और एकाकीपन

उत्तर : (क) नैतिक साहस की कमी और चारित्रिक दुर्बलता
स्पष्टीकरण: उमा का यह कथन सीधे शंकर के चरित्र और साहस पर प्रश्न उठाता है। "रीढ़ की हड्डी" यहाँ प्रतीक है हिम्मत और नैतिक दृढ़ता का। शंकर पूरे प्रसंग में अपने पिता की गलत बातों का विरोध नहीं करता और चुपचाप उनकी बातों का समर्थन करता है।
इसके अलावा, उमा यह भी बताती है कि शंकर पहले गलत काम करते पकड़ा गया था और वहाँ से डरकर भाग गया, जिससे उसकी कायरता स्पष्ट होती है। इसलिए यह वाक्य शंकर की नैतिक कमजोरी, साहस की कमी और चारित्रिक दुर्बलता को उजागर करता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

13. "जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ मैंने बी.ए. पास किया है" उमा की दृष्टि में शिक्षा प्राप्त करने का सही अर्थ है?

(A) बड़ी-बड़ी डिग्री प्राप्त करना
(B) कॉलेज में पढ़ना और नौकरी पाना
(C) माता-पिता और पति को प्रसन्न रखना
(D) आत्मबल और स्वतंत्र विचार रखना

उत्तर : (घ) आत्मबल और स्वतंत्र विचार रखना

स्पष्टीकरण: उमा के कथन से स्पष्ट है कि वह शिक्षा को केवल डिग्री हासिल करने या दिखावे के रूप में नहीं देखती। उसके लिए शिक्षा का सही अर्थ है सोचने-समझने की क्षमता, आत्म-सम्मान और अपने अधिकारों के लिए खड़े होने का साहस। जब वह समाज की गलत परंपराओं का विरोध करती है और निडर होकर अपनी बात रखती है, तो यह उसके स्वतंत्र विचार और आत्मबल को दर्शाता है।

इसलिए उमा की दृष्टि में शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति को मजबूत, जागरूक और आत्मनिर्भर बनाना है, न कि केवल डिग्री प्राप्त करना।

14. गोपालप्रसाद और रामस्वरूप में क्या-क्या समानताएँ हैं?

(A) दोनों प्रगतिशील हैं और रूढ़ियों को नकारते हैं।
(B) दोनों दिखावे और परंपरा के शिकार हैं।
(C) दोनों शिक्षा और रूढ़ियों के समर्थक हैं।
(D) दोनों संगीत और स्वादिष्ट भोजन के प्रेमी हैं।

उत्तर : (ख) दोनों दिखावे और परंपरा के शिकार हैं।

स्पष्टीकरण: गोपालप्रसाद और रामस्वरूप दोनों ही समाज की पुरानी, रूढ़िवादी मान्यताओं से प्रभावित हैं। गोपालप्रसाद लड़की को केवल उसकी सुंदरता और कम पढ़ाई के आधार पर परखते हैं, जबकि रामस्वरूप भी सच छिपाकर अपनी बेटी को "दिखाने" की कोशिश करते हैं। दोनों ही विवाह को एक लेन-देन या दिखावे की प्रक्रिया बना देते हैं, जहाँ लड़की की भावनाओं और व्यक्तित्व की अनदेखी होती है।

इसलिए स्पष्ट है कि दोनों पात्र दिखावे और परंपरागत सोच के दबाव में काम करते हैं, न कि सच्चे प्रगतिशील विचारों के आधार पर।

15. इस एकांकी की संवाद शैली मुख्यतः कैसी है?

(A) औपचारिक और शुष्क
(B) स्वाभाविक और व्यंग्यपूर्ण
(C) काव्यात्मक और प्रश्नात्मक
(D) भावुक और संक्षिप्त

उत्तर : (ख) स्वाभाविक और व्यंग्यपूर्ण

स्पष्टीकरण: इस एकांकी के संवाद बिल्कुल सामान्य बोलचाल की भाषा में हैं, जिससे पात्र और परिस्थितियाँ वास्तविक लगती हैं। साथ ही, कई जगहों पर लेखक ने व्यंग्य का प्रयोग किया है—जैसे गोपालप्रसाद की बातों में, या उमा के तीखे जवाबों में—जो समाज की गलत सोच पर चोट करते हैं।

इसलिए इसकी संवाद शैली स्वाभाविक भी है और व्यंग्य से भरपूर भी, जो इस नाटक को प्रभावशाली बनाती है।

*** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।** **[12]**

16. बाबू रामस्वरूप समाज में आधुनिक व्यवहार का दिखावा करते हैं, जबकि उनके विचार रूढ़िवादी हैं। इस अंतर्द्वंद्व के उदाहरण एकांकी में से खोजकर लिखिए।
(संकेत– उमा के साथ उनका व्यवहार, विवाह के लिए दिखावे करना किंतु इन प्रयासों को छिपाने की चेष्टा करना आदि।)

उत्तर : बाबू रामस्वरूप का चरित्र बाहरी रूप से आधुनिक दिखता है, लेकिन उनके भीतर गहरी रूढ़िवादी सोच छिपी हुई है। वे एक ओर अपनी बेटी उमा को पढ़ाते-लिखाते हैं, जो आधुनिकता का संकेत है, पर दूसरी ओर विवाह के समय उसकी पढ़ाई छिपाते हैं क्योंकि लड़के वालों को ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए। यह उनके अंतर्द्वंद्व को स्पष्ट करता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

वे दिखावे के लिए घर सजाते हैं, नाश्ते की व्यवस्था करते हैं और उमा को गाना गाने व सजी-धजी होकर आने को कहते हैं, ताकि अच्छा प्रभाव पड़े। लेकिन भीतर से वे भी उसी समाज की सोच को मानते हैं, जहाँ लड़की को परखा जाता है। इस प्रकार रामस्वरूप का व्यवहार दिखावटी आधुनिकता और वास्तविक रूढ़िवादिता के बीच के संघर्ष को दर्शाता है।

17. 'रीढ़ की हड्डी' के संदर्भ में दो अलग-अलग पात्रों के लिए भिन्न-भिन्न अर्थों में आया है, उनकी पहचान कीजिए और लिखिए।

उत्तर : एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' में यह प्रतीक दो पात्रों के लिए अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त हुआ है—उमा और शंकर।

उमा के संदर्भ में "रीढ़ की हड्डी" का अर्थ है आत्म-सम्मान, साहस और नैतिक दृढ़ता। वह समाज की गलत परंपराओं के सामने झुकती नहीं, बल्कि निडर होकर उनका विरोध करती है। उसके भीतर अपनी गरिमा की रक्षा करने की शक्ति है, जो उसकी सशक्त व्यक्तित्व को दर्शाती है।

दूसरी ओर, शंकर के लिए "रीढ़ की हड्डी" का अर्थ उसकी कमी को दर्शाता है। वह अपने पिता की गलत बातों का विरोध नहीं करता और स्वयं भी कायरता दिखाता है।

इस प्रकार, उमा में जहाँ "रीढ़" मौजूद है, वहीं शंकर में उसकी कमी दिखाई गई है।

18. "मेरी समझ में तो ये पढ़ाई-लिखाई के जंजाल आते नहीं।" प्रेमा की इस सोच से उस समय की स्त्री-शिक्षा की स्थिति के विषय में क्या पता चलता है?

उत्तर : प्रेमा के इस कथन से उस समय की स्त्री-शिक्षा की सीमित और उपेक्षित स्थिति स्पष्ट होती है। वह पढ़ाई-लिखाई को "जंजाल" मानती है, जिससे पता चलता है कि उस दौर में कई लोग, विशेषकर महिलाएँ, शिक्षा के महत्व को ठीक से नहीं समझती थीं। समाज में यह धारणा प्रचलित थी कि लड़कियों को अधिक पढ़ाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उनका मुख्य कार्य घर-गृहस्थी संभालना माना जाता था।

प्रेमा स्वयं कम पढ़ी-लिखी है, इसलिए वह पुरानी सोच को ही सही मानती है और उमा की उच्च शिक्षा को अनावश्यक समझती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि उस समय स्त्रियाँ शिक्षा से वंचित थीं और उनकी सोच भी उसी अनुसार सीमित रह गई थी।

19. लेखक ने 'रीढ़ की हड्डी' शब्द को एकांकी के शीर्षक के रूप में क्यों चुना होगा? यदि आप इस एकांकी का दूसरा शीर्षक रखना चाहें, जो इसकी मुख्य बात को दर्शाए, तो वह क्या होगा और क्यों?

उत्तर : लेखक ने 'रीढ़ की हड्डी'* शीर्षक इसलिए चुना है क्योंकि यह पूरे एकांकी की मुख्य भावना को दर्शाता है। यहाँ "रीढ़ की हड्डी" का अर्थ केवल शरीर का अंग नहीं, बल्कि साहस, आत्म-सम्मान और नैतिक दृढ़ता है। उमा समाज की गलत परंपराओं के सामने डटकर खड़ी होती है, जबकि शंकर में यह दृढ़ता नहीं है। इसलिए यह शीर्षक दोनों पात्रों के स्वभाव का अंतर स्पष्ट करता है।

यदि दूसरा शीर्षक रखना हो, तो वह "आत्म-सम्मान की आवाज़" हो सकता है। यह शीर्षक इसलिए उपयुक्त है क्योंकि पूरी कहानी में उमा अपने आत्म-सम्मान के लिए आवाज उठाती है और समाज की गलत सोच का विरोध करती है। यही इस एकांकी का मुख्य संदेश है।

----- -----

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in